20 P
198
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1348/10/21

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 198

198
K 144 [illegible]
RECEIVED.
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

आज़ादी का जौहर

यानी

नमक का पुजारी ।

ख्वाहिश मेरी यही है कुछ भी न आरज़ू हो ।
न हो जितेन्द्र जैसी रहने की आरज़ू हो ॥

लेखक व प्रकाशक—

स्वः हरिशंकर (सोहं) तिलक पुस्तकालय

झंडा बाज़ार देहरादून ।

प्रथमवार
१००० प्रति

सन् १९३० ई०

[illegible] मूल्य)॥

अमर प्रेस, देहरादून ।

10 DEC 1930
DEPARTMENT

आज़ादी का जौहर
यानी
नमक का पुजारी

संसार में भगवान का औतार होगया।
बस ज़ालिमों की समझो अब संहार होगया॥

ऐ बुज़दिलों तुम दिल के सब अरमान निकालो।
इस तरज़े हकूमत की कुछ दिन शान दिखालो॥
देखें भला किस देश में तुम जान छिपालो।
जल्दी से अपने मरने के सामान बनालो॥

हद से भी बढ़ कर यहाँ पर अत्याचार होगया।
तब ही तो खुद भगवान का औतार होगया॥
सब अपनी अपनी करनी का फल आप पायेंगे।
कांटे से कांटा आम से सब आम खायेंगे।
सच में है कितनी ताकत हम सबको दिखायेंगे।
रावण को मार सत्य की सीता छुड़ायेंगे॥

लो धर्म की किश्ती का बेड़ा पार होगया।
बेचारे इस भारत का भी उद्धार होगया॥
सब मिलके अब दुनिया से गुलामी को मिटा दो।
घर घर का [illegible] घर में जाकर के सुना दो॥
स्वराज्य की देवी पर सब कुछ भेंट चढ़ा दो।
भारत के हर घर का [illegible]॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No.
Date 13.7.1948
GOVT. OF INDIA

असुरों में रहना जब मुझे दुशवार होगया।
तब जेल जाने के लिये तैय्यार होगया॥

भगवान अपने भक्त के हृदे में सो रहे।
भारत के जख्मी सीने को आंसू से धो रहे॥
पापों की किश्ती भर भर के जल में डुबो रहे।
सब माल विदेशी को समुन्दर में ढो रहे।
घर घर में अब स्वराज्य का प्रचार होगया।
हर लब पे इसका ही ज़िकर हर बार होगया॥

स्वराज्य की अब कामना दिल में नहीं होगी।
अपने लिये अब ज़िन्दगी प्यारी नहीं होगी॥
दुनियां की किसी शै से अब उलफत नहीं होगी।
क्यों इतने पर भी भारत माता खुश नहीं होगी॥

जब द्वार पर सर रख दिया [illegible] होगया।
स्वराज्य के पाने का वो हकदार होगया॥

स्वराज्य के पाने की है जिसको नहीं लगन।
जो अपना तन मन माता को करता नहीं अरपन॥
जो खाके नमक भारत का करता नहीं पूरन।
उसको यहां रहना कभी जायज़ नहीं दिपन॥

देखो अब सोता भारत भी बेदार होगया।
भगवान जब भगतों का मददगार होगया॥

सरकार ने घर में हमारे डेरा जमाया ।
असली मालिक के ऊपर उसने पहरा लगाया ॥
अब मांगा अपना राज्य खुद को बहरा बनाया ।
अब तक स्वामीको धोके में था गहरा फंसाया ॥

पर आज में रही के खुद शिकार होगया ।
इकले नमक से चूर अहंकार होगया ॥

जो सत को कोई कुचलेगा खुद कुचला जायगा ।
अजमाकर जो अज़मायगा वह धोका खावेगा ॥
जितेन्द्र के पीछे क्या मोहन जांचा जायगा ।
पर याद रक्खो अब के वह नहीं दब्बा जायगा ।

अब सत के राजा जौहर को ही जेल में डाला ।
क्यों देखो बदनीति का फिर निकले न दीवाला ॥
क्यों लाज वह तज करके ज्यादा रे न उजाला ।
शहज़ादे का यह मिन्दर जो था नाजों से पाला ॥

जो नून का कानून था मुरदार होगया ।
वह टूटने से भारत का उपकार होगया ॥

अन्याय से जेलों में अपनी प्रजा को डालो ।
इसका बदला क्या होवेगा कुछ देखो न भालो ॥
जितनी हो तेरी तेरी ताक़त सबको बुलालो ।
जल्दी से अपना बोरिया बधना अब संभालो ॥

भीतर का दिल अब आप से बेज़ार होगया।
जब लाल जवाहर भी गिरफ़्तार होगया॥

हित की भरी बातों से बुरा मान जाओगे।
सुनते ही यह उपदेश मेरी जान खाओगे॥
पर प्रेम के मारे मुझे मेहमाँ बनाओगे।
मै आप का हूं दोस्त अब यह जान जाओगे॥

रहना यहां हजूर का दुशवार होगया।
कुछ ख़्याल (सोहं) आप को सरकार होगया॥

गर जीत चाहते हो तो अन्याय को तोड़ो।
और भेद भावना का वज्जर छाती से फोड़ो॥
फिर निरभै सिंघासन पै बैठ मूंछ मरोड़ो।
पर चापलूसी टट्टुओं का साथ अब छोड़ो॥

क्या मेरे सखुन पर तुम्हें ऐतबार होगया।
बस फिर तो तुम्हारा निश्चै से उद्धार होगया॥

लेकिन ग़रूर तुमको यह करने नहीं देगा।
छोटे की बात तुमको यह सुनने नहीं देगा॥
और सत के पास तुमको यह जाने नहीं देगा।
यह आँसे दिल में कभी आने नहीं देगा॥

मालूम राजन आप से करतार होगया।
अब आप की मस्त अक्ल में दुराचार होगया॥

इस कुदरती शै नून पर महसूल लगाया ।
प्रजा ने यह क़ानून नामाकूल बताया ॥
पर फिरभी शेख़ी में आकर नहीं टूल हटाया ।
लानत है उनपर जिनने था यह रूल बनाया ॥

तुमने तो अमानत पर ऐसा कब्ज़ा जमाया ।
गोया तुमने ये बाप दादा से वरसा पाया ॥
अफ़सोस तुमने अपने कुल पर बट्टा लगाया ।
जो डाक्टर के एहसां का यह बदला चुकाया ॥

उसके ही ज़रये आप का व्योपार होगया ।
खुश किस्मती से यहां पर कुल अधिकार होगया ॥

इसके लिये उसने बड़ी तकलीफ उठाई ।
पर खुद गरज़ी से तुमने मुल्क और दौलत गंवाई ॥
और सिद्धों में फिर अपनी शान और शौकत मिलाई ।
जब बनिये थे फिर तुमने क्यों यह ताकत दिखाई ॥

दुनियां का हर एक मुल्क खुद मुख्त्यार होगया ।
भारत भी उसका अब तो नम्बरदार होगया ॥

जिस राज्य की नियत में प्यारो आता है फ़तूर ।
सब कहते हैं कि दोज़ख़ में वह जाता है ज़रूर ॥
इक़बाल दौलत न्याय सब आजाता है हुज़ूर ।
मुल में लगा के आग डोडी होजाता है दूर ॥

जो अपने ही निज मुल्क का ख्ंख्वार हो गया ।
फिर आपका क्यों कर वह वफ़ादार हो गया ॥

यह तुम को दुदधू जानकर धन को उडारहे ।
तुम से यह अपने उल्लू को सीधा कारहे ॥
और मीठी मीठी बातों में तुम को फंसारहे ।
अपना घर खोकर फिर तुम को पट्टी पढारहे ॥

अब शंकर का (सोहं) से यह इकरार होगया ।
सब काम का मैं तेरे जिम्मे बार होगया ॥

ॐ ततसत ब्रह्म अर्पणम् ।

मिलने का पता:—

स्वः हरिशंकर (सोहं)
तिलक पुस्तकालय—
झंडा बाज़ार देहरादून ।

कृपया यह भी जरूर पढ़िये ।

गांधी आल्हा कीमत =) ईश्वर आल्हा -)

॥ ॐ ॥

प्रार्थना

ख्वाहिश मेरी है भगवन जितेन्द्र ही बनादे ।
इतना भी गर न होवे तो दास ही बनादे ॥
सानी भगत का करदे मोहन मुझे बनादे ।
मोती व लाल जैसा जौहर मुझे बनादे ॥

बन करके नूर सबकी आंखों में मैं समाऊं ।
वह दृस का राग प्यारा घर घर में मैं सुनाऊं ॥

सब के दिलों के ऊपर जिसने है राज्य पाया ।
आलम में जिसने अपना इक तहलका मचाया ॥
कहते हैं मौत किसको दुनियां को यह दिखाया ।
खुद जी के जिसने लाखों मुर्दों को है जिलाया ॥

वोही जितेन्द्र प्यारा आदर्श हो हमारा ।
जीवन सुफल हो (सोहं) का नाम हो तुम्हारा ॥

भोला पक्षी

देखना ! यह भोला नादां किस मजे में चुग रहा ।
हाय कि सर पै मौत इसके बैठी मंडलाई हुई ॥